हज़ुर सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम के बताए हुवे

मर्दों, औरतों और बच्चों के लिए बहुत जरूरी यकीनी फायदोंवाले

मस्नून वज़ाइफ

मुफती महमुद मोलाना सुलैमान बारडोली

मद्रसा समदिय्यह महमूदिय्यह उदगांव

नाज़िम: मोलाना जमालुल्लाह इब्ने शैख अमानुल्लाह इरानी

जरूरी बातें

१. हज़रत नबीए करीम ﷺ ने इर्शाद फरमाया: जो शख्स मेरी उम्मत को दीनदारी के बारे में चालीस हदीसें पहोंचा देवे तो अल्लाह तआला कयामत के दिन उसको फकीहों यअनी आलिमों की जमाअत में उठावेंगे, और में खुद उसकी सिफारिश करूंगा, और उसके इमान की गवाही दुंगा। (मिश्कात)

२. इस छोटी सी किताब में हज़रत नबीए करीम ﷺ से नकल किए हुवे हदीस शरीफ में आए हुवे मुबारक वज़ाइफ आपकी खिदमत में हम पेश करते हंय, हर वज़ीफे के साथ उसका हवाला भी लिख दिया गया है, अहादीस का खुलासा पेश किया गया है, बिअयनिही अलफाज़ नहीं है।

३. यह वह वज़ाइफ हंय जिनका फायदा यकीनी है, अल्लाह तआला की तरफ पूरा घ्यान लगा कर इख्लास और यकीन के साथ पढो, इन्शाअल्लाह हर वज़ीफे का हदीस

शरीफ में आया हुवा फायदा जरूर हासिल होगा।
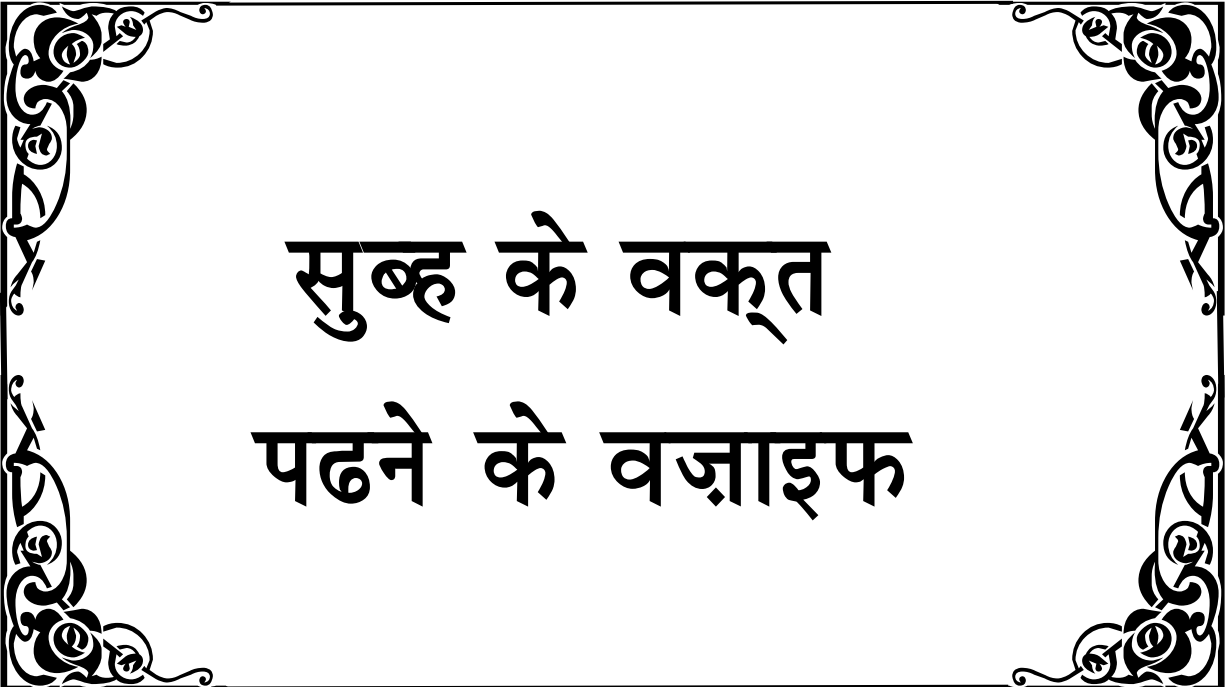
४. सुब्ह–शाम पंदरह मिनट, हर फर्ज़ नमाज़ के बाद पांच मिनट, रात सोते वकत दस मिनट इन वज़ाइफ को पढने के लिए फारिग करो, इन्शाअल्लाह इसके अजीब बरकात दुन्या आखिरत में पाओगे।

५. आजके ज़माने में जबके हर इन्सान मश्गूल मश्गूल होने की बात कर रहा हे, थोडे से वकत में इन वज़ाइफ के ज़रिए बहोत सारा सवाब और फायदे हासिल हो जाएंगे।

६. कोशिश करके पूरे फिक्र के साथ इन वज़ाइफ की पाबंदी शुरू करो, आसानी के लिए इस किताब को जैब में रखो, और जैब से निकाल कर पढ लिया करो, अल्लाह तआला हम सबको दुन्या व आखिरत में अपनी रज़ा से मालामाल फरमाए, आपके मुफीद मश्वरे और इस्लाही कलिमात का इन्तेज़ार रहेगा। वस्सलाम

महमूद बारडोली
जामिअह डाभेल

सुब्ह के वक्त पढने के वज़ाइफ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अमल छोटा सवाब बडा

﴿١﴾ थोडी देर में बहोत ज़यादह नेकी :

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَ بِحَمْدِهٖ، عَدَدَ خَلْقِهٖ، وَ رِضَا نَفْسِهٖ، وَ زِنَةَ عَرْشِهٖ، وَ مِدَادَ كَلِمَاتِهٖ.

(तीन मरतबा सुब्ह)

फज़ीलत: उम्मुल मुअमिनीन हज़रत जुवयरियह रदि. इर्शाद फरमाती हंय के एक मरतबा हुज़ुर ﷺ सुब्ह की नमाज़ के वकत जबके वह (यअनी हज़रते जुवयरीयह रदि.) अपने मुसल्ले पर थीं (यअनी ज़िक्रो दुआ में मश्गूल थीं) उनके यहांसे

नीकल कर गये, फिर चाश्त के बाद लोटे और हज़रत जुवयरीयह रदि. अभी तक उसी हालत पर बेठी थीं, तो हुज़ुर ﷺ ने पुछा:

"तुम अभी तक इसी हालत पर हो? जिस हालत पर मेंने तुमको छोडा था।"

"अपनी जगा से उठे नहीं?" यअनी इतने वकत तक ज़िक्र में ही रहे।

उन्होंने कहा: "जी हां।" (में उसी हालत पर हुं।)

हुज़ुर ﷺ ने फरमाया: "में ने तुमसे जुदा होने के बाद यअनी तुम्हारे पास से निकलने के बाद चार कलिमात तीन मरतबा कहे हंय, अगर उनको उन तमाम कलिमात के साथ जो तुमने आज कहे हंय वज़न कर दीया जाए तो वह चार कलिमात (जो उपर लीखे हंय) उन पर गालीब हो जाएं।" (यअनी उनका सवाब झयादह हो जावेगा) (मिश्कात १/२००, मुस्लिम, मुस्नदे अहमद: १/५८१)

﴾२﴿ जान–माल, घरबार की सलामती की दुआ:

(रोज़ाना सुब्ह एक मरतबा पढ लो)

رَبِّيَ اللّٰهُ الَّذِيْ لَآ إِلٰهَ إِلَّا هُوَ، عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَ هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ، مَا شَآءَ اللّٰهُ كَانَ وَ مَا لَمْ يَشَأْ لَمْ يَكُنْ، وَ لَا حَوْلَ وَ لَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ، أَشْهَدُ أَنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ وَّ أَنَّ اللّٰهَ قَدْ أَحَاطَ بِكُلِّ شَيْءٍ عِلْمًا، أَعُوْذُ بِاللّٰهِ الَّذِيْ يُمْسِكُ السَّمَاءَ أَنْ تَقَعَ عَلَى الْأَرْضِ إِلَّا بِإِذْنِهٖ مِنْ كُلِّ

دَابَّةٍ رَبِّيْ آخِذٌ بِنَاصِيَتِهَا إِنَّ رَبِّيْ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ.

फज़ीलत: हज़रत हसन रह. से रिवायत है के हम नबीए करीम ﷺ के एक सहाबी के पास बेठे हुए थे तो कीसीने आ कर उनको कहा:

के "तुम्हारे घर की खबर लीजीये, वह जल चूका है"

तो आपने फरमाया: "के नहीं जला है,"

वह शख्स जा कर फीर आया। केहने लगा "अपने घर की खबर लो, जल गया है।"

उन्होंने जवाब दीया, "नहीं! खुदाए पाक की कसम मेरा घर नहीं जला है।"

तो उस पर खबर देने वाले ने कहा के, "घर तो जल गया है और आप हें के कसम खा रहे हो के नहीं जला है।"

तो उन सहाबी रदि. ने अर्ज़ कीया: "के मेंने हुज़ुर अकदस ﷺ को इर्शाद फरमाते हुए सुना के, जो शख्स सुब्ह में यह दुआ (यअनी जो उपर लीख्खी गई है) पढे तो उस शख्स को अपने जान-माल और घरबार के सिलसिले में कोई नागवार बात पेश नहीं आएगी। और आज में ने यह दुआ पढी है।"

फीर उन सहाबी ने अर्ज़ कीया: "उठो" (घर की हालत देखें) चुनान्चे आप के साथ सब खडे हुवे, (घर पहोंचे तो कया देखते हंय के) आस-पास का सबकुछ जल गया है और उनके घर को कुछ भी नहीं हुवा। (इब्नुस्सुन्नी : पेज नं २१ ह.नं. ५८)

﴾३﴿ सूरए यासीन शरीफ की फज़ीलत:

हज़रत अता इब्ने अबी रबाह रह. फरमाते हंय: के मुजे यह हदीस पहुंची है के रसुलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फरमाया जो आदमी दिन के शुरू हिस्से में यासीन पढेगा तो उसकी हाजतें पुरी की जावेंगी। (मिश्कात १/१८९)

फज़ीलत: इस लिए रोज़ाना सुब्ह एक मरतबा यासीन शरीफ पढ लो।

कुर्आन मजीद का भी हक है, रोज़ाना जितना भी हो सके कुर्आन मजीद ज़रूर पढना चाहिए, तरतीब से पढोगे तो खत्म करने में भी आसानी होगी, और साल में दो मरतबा खत्म कर लेना चाहिए।

शिर्क और दिखलावे से हिफाज़त

﴾४﴿ शिर्के अकबर (यअनी अल्लाह के साथ किसीको शरीक करना) शिर्के अस्गर (यअनी रियाकारी, किसीको दिखाने के लिए अमल करना) दोनों से हिफाज़त की एक जामेअ दुआ:

اَللّٰهُمَّ إِنِّىٓ أَعُوْذُ بِكَ أَنْ أُشْرِكَ بِكَ وَ أَنَا أَعْلَمُ وَ

أَسْتَغْفِرُكَ لِمَا لَا أَعْلَمُ.

फज़ीलत: हज़रत अबूबक्र रदि. से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने एक मरतबा शिर्क का ज़िक्र फरमाया के शिर्क तुम्हारे अंदर ऐसे छुपे अंदाज़ से आ जाता है जैसे च्यूंटी की चाल के उसकी आवाज़ ही नहीं होती, और फरमाया के में तुम्हें एक ऐसा काम बतलाता हुं के जब तुम वह काम कर लो तो शिर्के अकबर (बडा शिर्क) और शिर्के अस्गार (छोटा शिर्क यअनी रिया, दिखलावे के लिए कोई काम करना) सबसे महफूज़ हो जाओ। तुम तीन मरतबा रोज़ाना यह दुआ किया करो, फिर उपरवाली दुआ बतलाई। (मआरिफुल कुर्आन: ५/६६३)

नोट: रिवायत में मुत्लकन रोज़ाना तीन मरतबा पढने का ज़िक्र है इसी लिए किसीभी वकत पढ लेना काफी है, अलबत्ता सुब्ह का वक्त दिलजम्ई का होता है उस वक्त पढ लो तो और ज़यादह अच्छा होगा।

सुब्ह-शाम दोनों वक़्त पढ़ने के वज़ाइफ

﴾٥﴿ जिस दुआ के पढने से खुद अल्लाह तआला बंदे को कयामत में राज़ी करनेकी ज़िम्मेदारी लेवे : (सुब्ह शाम तीन मरतबा)

رَضِيْتُ بِاللّٰهِ رَبًّا وَّ بِالْاِسْلَامِ دِيْنًا وَّ بِمُحَمَّدٍ نَبِيًّا وَّ رَسُوْلًا.

हज़रत षवबान रदि. फरमाते हंय के रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फरमाया: जो मुसलमान बंदा सुब्ह–शाम तीन मरतबा (यह उपर के कलिमात) पढे तो (कयामत के दिन) उसको राज़ी करने की ज़िम्मेदारी अल्लाह तआला लेंगे।

(तिरमीज़ी: २/१७६, इब्ने माजा: २८४)

नोट: तिरमीज़ी की रिवायत में رَسُوْلًا नहीं है, यह मुख्तलिफ रिवायात को मिला कर जामिअ कलिमह पेश किया गया है।

﴿٦﴾ सुब्ह–शाम के दरम्यान की कोताहियां मुआफ होने का वज़ीफा:

(सुब्ह शाम एक मरतबा)

أَعُوذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ ۝ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

فَسُبْحٰنَ اللّٰهِ حِيْنَ تُمْسُوْنَ وَ حِيْنَ تُصْبِحُوْنَ ۝ وَ لَهُ الْحَمْدُ
فِى السَّمٰوٰتِ وَ الْأَرْضِ وَ عَشِيًّا وَّ حِيْنَ تُظْهِرُوْنَ ۝ يُخْرِجُ
الْحَىَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَ يُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَ يُحْيِ الْأَرْضَ
بَعْدَ مَوْتِهَا وَ كَذٰلِكَ تُخْرَجُوْنَ ۝ (سورۂ روم:١٩)

फज़ीलत: हदीस शरीफ में है के जो शख्स यह आयात सुब्ह के वकत पढ लेवे तो जो

उससे फोत हो गया वह उसे पा लेगा और जो शामको यह आयात पढ लेवे उसको भी छूटे हुवे वज़ाइफ का सवाब मिल जाएगा। (अबु दावुद: २/६९२)

नोट: यअनी जो मअमूलात छूट गए हों उसकी तलाफी हो जाएगी और सवाब मिल जाएगा। (इस लिए इस आयत को सुब्ह–शाम एक मरतबा पढ लेना चाहिए)

(अवनुल मअबूद: १३/२८५)

﴾७﴿ सूरए इख्लास और मुअव्वज़तैन के फज़ाइल, फवाइद पढने के अवकात और तरीका:

أَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمُ ۝ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

قُلْ هُوَ اللّٰهُ أَحَدٌ ۝ اَللّٰهُ الصَّمَدُ ۝ لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُوْلَدْ ۝ وَلَمْ

يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا أَحَدٌ o

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ o قُلْ أَعُوْذُ بِرَبِّ الفَلَقِ o مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ o وَمِنْ شَرِّ غَاسِقٍ اِذَا وَقَبَ o وَمِنْ شَرِّ النَّفّٰثٰتِ فِى الْعُقَدِ o وَ مِنْ شَرِّ حَاسِدٍ اِذَا حَسَدَ o

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ o قُلْ أَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ o مَلِكِ النَّاسِ o إِلٰهِ النَّاسِ o مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ الْخَنَّاسِ o الَّذِيْ يُوَسْوِسُ فِىْ

صُدُوْرِ النَّاسِ مِنَ الْجِنَّةِ وَ النَّاسِ٥

हज़रत अब्दुल्लाह बिन खुबैब रदि. से रिवायत है के एक रात को बारिश और सख्त अंधेरा था, हम रसूलुल्लाह ﷺ को तलाश करने के लिए निकले, ताके हमको नमाज़ पढाएं, जब आपको पा लिया, तो आपने फरमायाः ''के कहो'' तो में ने कुछ नहीं कहा, फिर इसी तरह हुवा फिर आप ﷺ ने तीसरी मरतबा फरमायाः ''के कहो''

मेंने अर्ज़ किया :'' क्या कहुं?''

''आपने फरमायाः **قُلْ هُوَ اللّٰهُ أَحَد** और मुअव्वज़तैन यअनी قُلْ أَعُوْذُ بِرَبِّ الفَلَق और قُلْ أَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاس पढो, जब सुब्ह हो और जब शाम हो, तीन तीन मरतबा पढना हर चीज़ की तरफ से तुम्हारे लिए काफी होगा यअनी हर तरह की तकलीफ

से हिफाज़त होगी। (अबुदावुद; किताबुल अदब: ५१९३)

इस लिए रोज़ना सुब्ह शाम तीन तीन मरतबा यह तीनों सूरतें पढ लेवे।

नोट: हज़रत आइशा रदि. फरमाती हंय के रसूलुल्लाह ﷺ को जब कोई बीमारी पेश आती तो यह दोनों सूरतें (قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ الفَلَق और قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ النَّاس) पढ कर अपने हाथों पर दम करके सारे बदन पर फेर लेते थे। और फिर जब मरज़ुल वफात में (यअनी जिस बीमारी में वफात हुइ) आपकी तकलीफ बढी तो में यह सूरतें पढ कर आपके हाथों पर दम कर देती थी, आप अपने तमाम बदन पर फेर लेते थे। में यह काम इस लिए करती थी के हज़रत ﷺ के मुबारक हाथों का बदल मेरे हाथ नहीं हो सकते थे। (मुअत्ता मालिक: ३७५)

बुखारी शरीफ की एक हदीस से मअलूम होता है के हुज़ूर ﷺ बीमारियों के मोके पर मुअव्वज़ात (यअनी قُلْ هُوَ اللّٰهُ أَحَد और قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ الفَلَق और قُلْ أَعُوذُ

بِـرَبِّ النَّاس) को पढ कर अपने उपर दम करते रहते थे, और मरज़ुल वफात में भी यह अमल फरमाया। (बुखारीः २/६३९)

नोटः हदीस शरीफ से मअलूम होता है के सुब्ह में उठते वकत भी इन दोनों सूरतों (यअनी قُلْ أَعُوْذُ بِرَبِّ الفَلَق और قُلْ أَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاس) को पढ लेवे। (मआरिफुल कुर्आन)

﴿८﴾ बहोत से फायदेवाला कलिमहः (सुब्ह शाम एक मरतबा)

لَآ إِلٰـــهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ.

फज़ीलतः हदीस शरीफ में है जो शख्स सुब्ह के वकत यह कलीमह पढे (यअनी एक मरतबा) १. उसे हज़रत इस्माइल عَلَيْهِ السَّلَام की अवलाद में से एक गुलाम आज़ाद करने का

सवाब मीलता है।

२. उसके लीए दस (१०) नेकीयां लीखी जाती है।

३. उसके दस (१०) गुनाह मआफ होते है.

४. उसके दस (१०) दरजे (जन्नत में) बुलंद होते है।

५. वह शाम तक शयतान की शरारत से महफुज़ रहता है।

और जो शख्स यह कलीमह शाम को पढे तो सुब्ह तक उसके लीये ऐसा ही होता है। (अबुदावुदः २/६९२, इब्ने माजाः .पे४)

﴾९﴿ जिन्नात से हिफाज़त के लिये दुआः

أَعُوْذُ بِوَجْهِ اللّٰهِ الْكَرِيْمِ، وَ بِكَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّامَّاتِ اللَّاتِىْ لَا

يُـجَـاوِزُهُنَّ بَرٌّ وَّ لَا فَاجِرٌ، مِّنْ شَرِّ مَا يَنْزِلُ مِنَ السَّمَـآءِ وَ شَرِّ

مَـا يَعْرُجُ فِيْهَا، وَ شَرِّ مَا ذَرَأَ فِى الْأَرْضِ وَ شَرِّ مَا يَخْرُجُ مِنْهَا،
وَ مِـنْ فِتَـنِ الـلَّيْـلِ وَ الـنَّهَـارِ وَ مِـنْ طَوَارِقِ اللَّيْلِ وَ النَّهَارِ إِلَّا
طَارِقًا يَّطْرُقُ بِخَيْرٍ يَّا رَحْمٰنُ

(मुअत्ता हदीस नं १९०८,४/४०८)

एक खबीस जिन्नात आग का शोअला ले कर हुज़ूर ﷺ के पीछे लगा तो उसको दूर करने के लिए हज़रत जिब्राइल عليه السلام ने उपरवाली दुआ दुआ सिखाई।

(इख्तीसार के साथ बिल मअ्ना)

शरारत करनेवाले जिन्नात से बचने के लिए यह दुआ बहोत मुफीद है।

नोट: रिवायत में इस दुआ के मुतअल्लिक कब पढना हय? और कितनी मरतबा पढना हय? यह नहीं मिल सका, इस लिए दिन में किसीभी एक वकत पढ लेवे तो

इन्शाअल्लाह काफी हो जाएगा, और सुब्ह–शाम दोनों वकत पढ लेवे तो भी ठीक है।

﴾१०﴿ जादू से हिफाज़त के मुफीद कलिमात:

أَعُوذُ بِوَجْهِ اللّٰهِ الْعَظِيمِ الَّذِىْ لَيْسَ شَىْءٌ أَعْظَمَ مِنْهُ، وَ بِكَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّامَّاتِ الَّتِىْ لَا يُجَاوِزُهُنَّ بَرٌّ وَّ لَا فَاجِرٌ، وَ بِأَسْمَاءِ اللّٰهِ الْحُسْنٰى كُلِّهَا مَا عَلِمْتُ مِنْهَا وَ مَا لَمْ أَعْلَمْ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ وَ بَرَءَ وَ ذَرَءَ۔

(मुअत्ता हदीस नं:१९१०,४/४०९)

फज़ीलत: हज़रत कअब अहबार रदि. से रिवायत है के अगर चंद कलिमात का में विर्द न रखता तो यहूद मुजे (जादू के ज़ोर से) गधा बना देते, इस लिए जादू से

हिफाज़त के लिए यह दुआ पढते रहना चाहिए। कअब अहबार रदि बडे यहूदी आलिम थे, तौरात के हाफिज़ थे, जब उन्होंने इमान कबूल किया तो यहूद उनके दुश्मन बन गए, और उन पर जादू करने लगे।

नोटः रिवायत में इस दुआ के मुतअल्लिक कब पढना हय? और कितनी मरतबा पढना हय? यह नहीं मिल सका, इस लिए दिन में किसीभी एक वकत पढ लेवे तो इन्शाअल्लाह काफी हो जाएगा, और सुब्ह–शाम दोनों वकत पढ लेवे तो भी ठीक है।

(११) एकसीडन्ट, हवादिसात से बचने की दुआः (सुब्ह शाम तीन मरतबा)

بِسْمِ اللّٰهِ الَّذِيْ لَا يَضُرُّ مَعَ اسْمِهٖ شَيْءٌ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِى السَّمَآءِ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمْ.

हज़रत अबान बिन उस्मान रह. हज़रत उस्मान गनी रदि. से रिवायत करते हंय के ....

जो शख्स रोज़ना सुब्ह शाम तीन मरतबा यह दुआ पढेगा उसको कोई चीज़ तकलीफ नहीं पहोंचा सकती।

फिर अबान बिन उस्मान रह. (इस हदीस के रावी) को फालिज की बीमारी लग गई तो जिन्होंने यह हदीस हज़रत अबान रह से सुनी थी वह तअज्जुब से उनकी तरफ देखने लगे।

तो आपने फरमाया: ''कयुं इस तरह तअज्जुब से देखते हो?''

''अल्लाह पाक की कसम! न मेंने तुमको वह हदीस झूटी बयान की और न मुजे वह झूट बयान की गई। (हदीसें तो अपनी जगा बिल्कुल सहीह हंय के उसके पढने से कोई चीज़ नुकसान नहीं पहोंचा सकती) लेकिन जब अल्लाह तआला ने मेरे उपर अपनी तकदीर को नाफिज़ करना चाहा तो में वह दुआ पढना

ही भूल गया।'' (अबुदावुद : किताबुल अदब;२/६९४)

फज़ीलत: हदीस शरीफ में यह भी है के जो शख्स हर रोज़ सुब्ह–शाम यह कलिमात (यअनी उपरवाली दुआ) तीन मरतबा पढेगा उसको कोई चीज़ नुकसान नहीं पहोंचा सकती। (अत्तरगीब: १/४१५)

और एक रिवायत में है के उस पर कोई अचानक आफत नहीं आती। (अबुदावुद :१/६९४)

दुश्मनों और बलाओं से हिफाज़त

﴿१२﴾ हुज़ूर ﷺ से नकल की गई सुब्ह शाम मांगने की दो मुबारक दुआएं: **(एकएक मरतबा)**

اَللّٰهُمَّ إِنِّیْ أَعُوْذُ بِکَ مِنْ جَهْدِ الْبَلَآءِ، وَ دَرْکِ الشَّقَاءِ، وَ

سُوْءِ الْقَضَاءِ، وَ شَمَاتَةِ الْأَعْدَاءِ. (مفہوم از بخاری شریف:۹۷۹/۲)

﴿१३﴾ اَللّٰهُمَّ إِنِّی أَعُوْذُ بِکَ مِنْ شَرِّ مَا عَمِلْتُ، وَ مِنْ شَرِّ مَا لَمْ أَعْمَلْ.

(इब्ने माजा: २८१)

हर बुराई हर तकलीफ से हिफाज़त

﴿१४﴾ हर तकलीफ से अमान पाने की दुआ: (शाम को तीन मरतबा पढें)

أَعُوْذُ بِكَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّامَّـاتِ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ.

कबीलए असलम के एक आदमीने हुज़ुर ﷺ से कहा के आजकी रात मुजे नींद नहीं आयी,

आप ﷺ ने पूछा: “कीस वजह से?” उन्होंने कहा: “के मुजे बिच्छुने डस लीया।”

तो आप ﷺ ने फरमाया: “अगर शाम को तुमने यह दुआ पढ़ली होती तो (इन्शा अल्लाहु अज़्ज़वजल्ल) कोई चीज़ तुम्हें तकलीफ न पहोंचाती।

(मुस्लीम : २/३४७, तबरानी : ह.नं. ३४६, २/९५५,)

नोट: तिरमिज़ी शरीफ में एक हदीस में आया है के शाम के वकत तीन मरतबह इस दुआ को पढ़ने से उस रात में बुखार-ज़हर (वगैरह कोई चीज़) नुकसान नहिं देगी। (तिरमिज़ी: २/२००)

उसमें एक रावी हज़रत सुहैल रह. फरमाते हंय : हमारे घरवालों ने यह दुआ याद कर ली वह रोज़ाना रात को पढ लिया करते थे, पस एक लडकी को बिच्छू ने डस लिया तो उसको इस दुआ की बरकत से कोई तकलीफ नहीं हूइ।

नोटः और अवराद की बाज़ किताबों में देखा के सुब्ह में भी यह दुआ तीन मरतबा पढ लेना चाहिए।

﴾१५﴿ आयतुल कुर्सी और सूरए मुअमिन की चंद आयतों की फज़ीलत:

(आयतुल कुर्सी और सूरए मुअमिन की यह आयतें सुब्ह–शाम एक मरतबा पढ लें)

أَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمُ ۝ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

حٰمٓ ۝ تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ ۝ غَافِرِ الذَّنْبِ وَ قَابِلِ التَّوْبِ شَدِيْدِ الْعِقَابِ ذِى الطَّوْلِ، لَآ إِلٰهَ إِلَّا هُوَ إِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ۝

१: हज़रत अबूहुरैरह रदि. से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया के जो शख्स सुब्ह में सूरए मुअमिन की पेहली तीन आयतें (उपरवाली) और आयतुल कुर्सी पढ ले वह उस दिन शाम तक (हर बुराई और तकलीफ से) महफूज़ रहेगा। और जो शाम को पढ लेवे तो सुब्ह तक (हर बुराई और तकलीफ से) महफूज़ रहेगा। (तिरमिज़ी: २/११५)

(१६) हिफाज़त के लिए हज़रत अनस रदि. की खास दुआ:

(सुब्ह–शाम एक या तीन मरतबा)

بِسْمِ اللّٰهِ عَلٰى نَفْسِىْ وَ دِيْنِىْ، بِسْمِ اللّٰهِ عَلٰى أَهْلِىْ وَ مَالِىْ وَوَلَدِىْ، بِسْمِ اللّٰهِ عَلٰى مَا أَعْطَانِيَ اللّٰهُ، اَللّٰهُ رَبِّىْ لَا أُشْرِكُ بِهٖ

شَيْـئًا، اَللّٰهُ أَكْبَرُ، اَللّٰهُ اَكْبَرُ، اَللّٰهُ اَكْبَرُ. وَأَعَزُّ وَ أَجَلُّ وَ أَعْظَمُ مِمَّا أَخَـافُ وَ أَحْـذَرُ، عَزَّ جَارُكَ وَ جَلَّ ثَنَائُكَ وَ لَآ إِلٰـهَ غَيْرُكَ ، اَللّٰهُمَّ إِنِّىْ أَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّ نَفْسِىْ وَ مِنْ شَرِّ كُلِّ شَيْطَانٍ مَّرِيْدٍ وَّ مِـنْ شَـرِّ كُلِّ جَبَّارٍ عَنِيْدٍ، فَاِنْ تَوَلَّوْا فَقُلْ حَسْبِيَ اللّٰهُ لَآ إِلٰـهَ إِلَّا هُـوَ، عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَ هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ، إِنَّ وَلِيِّيَ اللّٰهُ الَّذِيْ نَزَّلَ الْكِتٰبَ، وَ هُوَ يَتَوَلَّى الصّٰلِحِيْنَ۝

यह दुआ हज़रत अनस बिन मालिक रदि. से मन्कूल दुआ है, जो आं

हज़रत ﷺ के खादिमे खास थे, उनसे नकल की हुई यह दुआ दुश्मन, ज़ालिम, शैतान से हिफाज़त के लिए बहोत ही मुफीद है, उसको पढते रहना चाहिए, सुब्ह–शाम एक मरतबा पढ लेना भी काफी है, तीन तीन मरतबा पढ लेवे तो और ज़यादह अच्छा है। (आपके मसाइल और उनका हल: ८/२३३)

﴾१७﴿ इस दुआ की बरकत से अल्लाह तआला की मदद हासिल होगी और हर काम दुरूस्त हो जाएगा: (सुब्ह–शाम तीन मरतबा)

يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ بِرَحْمَتِكَ أَسْتَغِيْثُ، أَصْلِحْ لِيْ شَأْنِيْ كُلَّهُ، وَ لَا تَكِلْنِيْ إِلٰى نَفْسِيْ طَرْفَةَ عَيْنٍ.

(الترغيب والترهيب: ٢/٤٢١)

﴿١٨﴾ तंदुरस्ती और आफियत के लिए:

اَللّٰهُمَّ عَافِنِىْ فِيْ بَدَنِىْ، اَللّٰهُمَّ عَافِنِىْ فِىْ سَمْعِىْ،اَللّٰهُمَّ عَافِنِىْ فِىْ بَصَرِىْ، لَآ اِلٰـهَ اِلَّا اَنْتَ۔ (ابوداؤد:۲/۶۹۴)

उपरवाले दोनों कलिमात सुब्ह-शाम तीन तीन मरतबा पढ लेना चाहिए। अबूदावुद की इसी रिवायत में है के

﴿١٩﴾ اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَعُوْذُ بِكَ مِنَ الْكُفْرِ وَالْفَقْرِ اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ لَآ اِلٰـهَ اِلَّا اَنْتَ.

यह दुआ भी सुब्ह शाम तीन मरतबा पढना आया है, इस दुआ की बरकत

से कुफ़्र, फकीरी और अज़ाबे कब्र से इन्शाअल्लाह हिफाज़त होगी।

﴾२०﴿ हर काम आसान हो जावे, गम और उलझन दूर हो जावे :

(सुब्ह-शाम सात मरतबा)

حَسْبِیَ اللّٰہُ لَآ اِلٰـہَ اِلَّا ھُوَ عَلَیْہِ تَوَکَّلْتُ وَ ھُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِیْمِ۔

फज़ीलत: एक हदीस में है के जो शख्स सुब्ह-शाम यह कलिमात सात मरतबा पढे तो अल्लाह तआला उसके हर काम को आसान फरमा देते हंय, यअनी दुन्या व आखिरत के हर अहम कामों की किफायत फरमाते हंय।

(तरगीब: १/२५५;मकतबए अब्बास अहमद अलबाज़, मक्कतुल मुकर्रमह, अबूदावुद)

﴾२१﴿ इस्तिगफार का सरदार: (सुब्ह–शाम एक मरतबा)

اَللّٰهُمَّ أَنْتَ رَبِّىْ لَآ إِلٰهَ اِلّا أَنْتَ خَلَقْتَنِىْ وَ أَنَا عَبْدُكَ وَ أَنَا عَلٰى عَهْدِكَ وَوَعْدِكَ مَا اسْتَطَعْتُ أَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا صَنَعْتُ أَبُوْءُ لَكَ بِنِعْمَتِكَ عَلَىَّ وَ اَبُوْءُ لَكَ بِذَنْبِىْ فَاغْفِرْلِىْ فَإِنَّهٗ لَا يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ إِلَّا أَنْتَ.

यह सय्यिदुल इस्तिगफार है, यअनी अपने गुनाहों से मुआफी मांगने के लिए जितने अल्फाज़ हंय उनमें यह सरदार की हयसियत रखते हंय, लिहाज़ा इस दुआ को मांगते हुवे खूब नदामत हो, और आंखों से आंसू टपके, और दिल से

मुआफी चाहे के अय अल्लाह आज तु मुआफ फरमा दे।

फज़ीलत : जो शख्स इस दुआको इसकी फज़ीलत पर यकीन रखते हुवे सुब्ह पढे और शाम से पेहले वफात हो जाए तो उसके लीये जन्नत वाजिब हो जाएगी। और जिसने इसकी फज़ीलत पर यकीन रखते हुवे शामको ये दुआ पढी और सुब्ह से पेहले वफात हो जाए तो उसके लीये जन्नत वाजिब हो जाएगी। (बुखारी : २/९३३)

(२२) दिन और रात की नेअमतों का शुक्र अदा करने की दुआ:

(सुब्ह में यह दुआ एक मरतबह पढे)

اَللّٰهُمَّ مَا أَصْبَحَ بِی مِنْ نِعْمَةٍ أَوْ بِأَحَدٍ مِنْ خَلْقِکَ فَمِنْکَ وَحْدَکَ لَا شَرِیْکَ لَکَ، فَلَکَ الْحَمْدُ وَ لَکَ الشُّکْرُ۔

नोट: शाम को यह दुआ एक मरतबा इस तरह पढे:

اَللّٰهُمَّ مَا أَمْسٰى بِىْ مِنْ نِعْمَةٍ أَوْ بِأَحَدٍ مِنْ خَلْقِكَ فَمِنْكَ وَحْدَكَ لَا شَرِيْكَ لَكَ، فَلَكَ الْحَمْدُ وَ لَكَ الشُّكْرُ۔

फज़ीलत: हुज़ूर ﷺ ने फरमाया: जो सुब्ह को यह दुआ पढे तो उसने आजके दिन की नेअमतों का शुक्र अदा कर दिया, (यअनी आजके दिन में जितनी भी नेअमतें उसको अल्लाह तआला की तरफ से मिली उन तमाम नेअमतों का) और जो शाम को पढे तो उसने रात की नेअमतों का शुक्र अदा कर दिया। (मिश्कात: १/२११)

जो शख्स यह चाहता है के उस पर नेअमतें बहोत ज़यादह हों और मवजूदह नेअमतें हंमेशा रहे तो उसको चाहिये के ज़यादह से ज़यादह हर हाल में अल्लाह तआला का शुक्र अदा करे।

﴾२३﴿ इस्तिगफार का खास फायदा:

أَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ الَّذِيْ لَآ إِلٰـهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّوْمُ وَ أَتُوْبُ إِلَيْهِ۔

हदीस में आया है के जो सुब्ह में यअनी फजर की नमाज़ के बाद और असर के बाद तीन मरतबा यह इस्तिगफार पढे तो उसके गुनाह मुआफ हो जाते हंय, चाहे समंदर की झाग के बराबर हों।

नोटः इसी रिवायत में आगे चल कर यह भी है के नबीए करीम ﷺ ने इर्शाद फरमाया के अय कबीसा (यह सहाबी का नाम हय)जब तुम फजर की नमाज़ पढ चुको तो तीन मरतबा पढोः

سُبْحَانَ اللّٰهِ الْعَظِيْمِ وَ بِحَمْدِهٖ.

तो अंधेपन और जुज़ाम और फालिज की बीमारी से आफियत रहेगी।

(यअनी इन तीन बीमारी से इन्शाअल्लाह हिफाज़त होगी) इस लिए फजर के बाद तीन मरतबा यह कलिमह पढ लेना चाहिए। (तरगीब: १/३७७, दारे इब्ने कसीर, दमिश्क, बेरूत)

(२४) १. "اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ"

२. "أَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ الَّذِيْ لَآ إِلٰـهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّوْمُ وَ أَتُوْبُ إِلَيْهِ"

३. "أَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ رَبِّىْ مِنْ كُلِّ ذَنْبٍ وَّ اَتُوْبُ اِلَيْهِ"

(तीनों मेंसे कोई भी एक रोज़ाना सो मरतबा पढने का मामूल बनाए, बेहतर है के सुब्ह-शाम दोनों वक्त सो सो मरतबा पढ ले)

रियाज़ुस्सालिहीन में किताबुल इस्तिगफार में बुखारी व मुस्लिम शरीफ के हवाले से नकल किया है के खुद हज़रत नबीए करीम ﷺ रोज़ाना सित्तेर से

ज़यादह मरतबा इस्तिगफार करते थे, इसी तरह १०० मरतबा भी आप ﷺ से इस्तिगफार साबित है। (रियाज़ुस्सालिहीन: ४२७)

कुर्आन मजीद में इस्तिगफार के कई फवाइद आए हंय, (१) इस्तिगफार की बरकत से मुसलाधार बारिश (२) माल में बरकत (३) अवलाद में बरकत (४) बाग–वाडी में बरकत (५) नहर–नदी में बरकत।

(२५) سُبْحَانَ اللّٰهُ، اَلْحَمْدُ لِلّٰهُ، لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ ، اَللّٰهُ أَكْبَر सुब्ह शाम सो मरतबा पढने का सवाब:

हदीस शरीफ में आया है के जो शख्स सुब्ह–शाम सो मरतबा سُبْحَانَ اللّٰه पढे तो उसको सो हज का सवाब मिलता है, और जो सो मरतबा اَلْحَمْدُ لِلّٰهُ कहे तो उसको अल्लाह तआला के रास्ते में सो घोडे मअ सामान देने का सवाब मिलता है

या सो गज़वात का सवाब मिलता है, और सुब्ह शाम सो मरतबा لَا إِلٰـهَ إِلَّا اللّٰهُ पढे तो हज़रत इस्माइल عليه السلام की अवलाद में से सो गुलाम आज़ाद करने का सवाब मिलता है, और सो मरतबा सुब्ह शाम اَللّٰـهُ أَكْبَـر पढे तो उसके जितना सवाब कोई हासिल नहीं कर सकता सिवाए उस शख्स के जो इसको पढे, या इससे ज़यादह पढ लेवे। (तिरमिज़ी: १/१८५)

(२६) रोज़ाना सो मरतबा दुरूद शरीफ:

हदीस शरीफ में है के जो शख्स सो मरतबा दुरूद शरीफ पढता है तो

१. अल्लाह तआला उस पढनेवाले की पेशानी पर "برائة من النفاق و برائة من الـنـار" लिख देते हंय, यअनी उस आदमी में निफाक नहीं है और जहन्नम से बचा हुवा है।

२. कयामत के दिन शहीदों के साथ अल्लाह तआला उसका हिसाब-किताब करेंगे।

३. अल्लाह तआला एक हज़ार मरतबा दुरूद (रहमत) उतारेंगे।

(फज़ाइले दुरूद: पे.६६८)

४. हुज़ूर ﷺ के हम पर बहोत सारे हुकूक हंय, इस लिए रोज़ाना सुब्ह-शाम कम अज़ कम सो मरतबा दुरूद शरीफ की आदत बना लो, दुरूद शरीफ की बरकत से बीमारियों से शिफा, ज़िंदगी में सुकून, रोज़ी में बरकत, अल्लाह तआला की मुहब्बत, नबी ﷺ की मुहब्बत, यह सब नेअमतें इन्शाअल्लाह हासिल होगी। कोई भी दुरूद शरीफ पढो, चाहे नमाज़वाला यअनी दुरूदे इब्राहीम, या मुख्तसर दुरूद जैसे:

وَ صَلَّى اللّٰهُ عَلَى النَّبِیِّ الْاُمِّیِّ

या

صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٌ

﴿२७﴾ जहन्नम से छुटकारे का वज़ीफा:

اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَصْبَحْتُ اُشْھِدُکَ وَ اُشْھِدُ حَمَلَۃَ عَرْشِکَ وَ مَلَآئِکَتِکَ وَ جَمِیْعَ خَلْقِکَ اَنَّکَ اَنْتَ اللّٰہُ لَآ اِلٰہَ اِلَّا اَنْتَ وَ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُکَ وَ رَسُوْلُکَ۔

फज़ीलत: हज़रत अनस रदि. से रिवायत है के हुज़ूर ﷺ ने फरमाया जिसका

खुलासा यह है के जो शख्स इस दुआ को सुब्ह चार मरतबा पढ लेगा तो अल्लाह तआला उसके पूरे बदन को जहन्नम से आज़ादी अता फरमाएंगे।

(अबूदावुद: २/६९१)

और शाम को यह दुआ चार मरतबा इस तरह पढें:

اَللّٰهُمَّ إِنِّىْ أَمْسَيْتُ، أُشْهِدُكَ وَ أُشْهِدُ حَمَلَةَ عَرْشِكَ وَ مَلآئِكَتَكَ وَ جَمِيْعَ خَلْقِكَ أَنَّكَ أَنْتَ اللّٰهُ، لَآ إِلٰهَ إِلَّا أَنْتَ وَ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُكَ وَ رَسُوْلُكَ.

﴾२८﴿ बखीली, बुज़दिली, बुरा बुढापा, दुन्या के फित्ने और अज़ाबे कब्र से हिफाज़त:

اَللّٰهُمَّ إِنِّیْ أَعُوْذُ بِکَ مِنَ الْبُخْلِ وَأَعُوْذُ بِکَ مِنَ الْجُبْنِ وَ أَعُوْذُ بِکَ أَنْ أُرَدَّ إِلٰی أَرْذَلِ الْعُمُرِ وَأَعُوْذُ بِکَ مِنْ فِتْنَةِ الدُّنْیَا وَعَذَابِ الْقَبْرِ.

नसई में बरिवायत हज़रत सअद रदि. मन्कूल है के रसूलुल्लाह ﷺ यह दुआ बहुत ज़यादह मांगा करते थे, और इस हदीस के रावी हज़रत सअद रदि बडे एहतेमाम से यह दुआ अपनी सब अवलाद को याद कराया करते थे।

(नसइ; बाबुल इसतिआज़ह मिनल बुख्ल :२/२६६.नं.५४५५)

(२९) बीमारी दूर करने के लिए:

تَوَكَّلْتُ عَلَى الْحَيِّ الَّذِيْ لَا يَمُوْتُ. اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ لَمْ يَتَّخِذْ وَلَداً وَّ لَمْ يَكُنْ لَهٗ شَرِيْكٌ فِي الْمُلْكِ وَ لَمْ يَكُنْ لَّهٗ وَلِيٌّ مِّنَ الذُّلِّ وَكَبِّرْهُ تَكْبِيْراً.

हज़रत अबूहुरैरह रदि. फरमाते हंय के एक दिन में रसूलुल्लाहﷺ के साथ बाहिर निकला इस तरह के मेरा हाथ आपके हाथ में था, आपﷺ ऐसे आदमी के पास से गुज़रे जो बहोत शिकस्ता हाल और परेशान था, आपने पूछा के तुम्हारा यह हाल कैसे हो गया? उस शख्स ने अर्ज़ किया के बीमारी और तंगदस्ती

ने यह हाल कर दिया, आप ﷺ ने फरमाया: के में तुम्हें चंद कलिमात बतलाता हुं वह पढोगे तो तुम्हारी बीमारी और तंगदस्ती जाती रहेगी वह कलिमात उपरवाले थे।

उसके कुछ दिनों बाद फिर आप उस तरफ तशरीफ ले गए तो उसको अच्छे हाल में पाया, आपने खुशी का इज़हार फरमाया, उसने अर्ज़ किया जबसे आपने मुजे यह कलिमात बतलाए थे में पाबंदी उनको पढता हुं।

(मआरिफुल कुर्आन: ५/५४३)

नोट: रिवायत में इस दुआ के मुतअल्लिक कब पढना हय? और कितनी मरतबा पढना हय? यह नहीं मिल सका, इस लिए दिन में किसीभी एक वकत पढ लेवे तो इन्शाअल्लाह काफी हो जाएगा, और सुब्ह-शाम दोनों वकत पढ लेवे तो भी ठीक है।

﴾३०﴿ सख्त बीमारी के मोके पर पढने की आयत:

أَعُوذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ ○ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

أَفَحَسِبْتُمْ أَنَّمَا خَلَقْنَاكُمْ عَبَثًا وَّأَنَّكُمْ إِلَيْنَا لَا تُرْجَعُوْنَ. فَتَعَالَى اللّٰهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ ج لَآ إِلٰـهَ إِلَّا هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيْمِ. وَمَنْ يَّدْعُ مَعَ اللّٰهِ إِلٰهًا آخَرَ لا لَا بُرْهَانَ لَهُ بِهٖ لا فَإِنَّمَا حِسَابُهٗ عِنْدَ رَبِّهٖ ط إِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الْكٰفِرُوْنَ○ وَقُلْ رَّبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَأَنْتَ خَيْرُ الرّٰحِمِيْنَ ○

सूरए मुअमिनून की यह आखरी आयतें खास फज़ीलत रखती हंय, इमाम बगवी रह. और इमाम षअलबी रह. ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्उद रदि. से

रिवायत किया है के वह एक ऐसे आदमी के पास से गुज़रे जो सख्त बीमारियों में मुब्तला था, हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्उद रदि. ने उसके कान में यह आयतें أَفَحَسِبْتُمْ से अखीर तक पढ दीं। वह उसी वकत अच्छा हो गया, रसूलुल्लाह ﷺ ने उनसे दरयाफत किया के आपने उसके कान में कया पढा? हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्उद रदि. ने अर्ज़ किया के यह आयतें पढी हंय। रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: कसम है उस ज़ात की जिसके कब्ज़े में मेरी जान है, अगर कोई आदमी जो यकीन रखनेवाला हो यह आयतें पहाड के सामने पढ दे तो पहाड अपनी जगा से हट सकता है। (कुरतुबी: १२/१५७)

नोट: रिवायत में इस दुआ के मुतअल्लिक कब पढना हय? और कितनी मरतबा पढना हय? यह नहीं मिल सका, इस लिए दिन में किसीभी एक वकत पढ लेवे तो इन्शाअल्लाह काफी हो जाएगा, और सुब्ह-शाम दोनों वकत पढ लेवे तो भी ठीक है।

फ़र्ज़ नमाज़ के बाद पढने के वज़ाइफ

❁३१❁ आयतुल कुर्सी के खास फज़ाइल:

أَعُوذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ ۝ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

اَللّٰهُ لَآ إِلٰهَ إِلَّا هُوَ ج اَلْحَيُّ الْقَيُّوْمُ ج لَا تَأْخُذُهٗ سِنَةٌ وَّ لَا نَوْمٌ ط
لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَ مَا فِي الْأَرْضِ ط مَنْ ذَا الَّذِيْ يَشْفَعُ عِنْدَهٗ
إِلَّا بِإِذْنِهٖ ط يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيْهِمْ وَ مَا خَلْفَهُمْ ج وَ لَا يُحِيْطُوْنَ
بِشَيْءٍ مِنْ عِلْمِهٖٓ إِلَّا بِمَا شَآءَ ج وَسِعَ كُرْسِيُّهُ السَّمٰوٰتِ وَ
الْأَرْضَ ج وَ لَا يَئُوْدُهٗ حِفْظُهُمَا ج وَ هُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيْمُ ۝

हज़रत अबूहुरैरह रदि. फरमाते हंय के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: सूरए बकरह में एक आयत है जो कुर्आनी आयतों की सरदार है, वह जिस घर में पढी जावे शैतान वहां से निकल जाता है।

नसई शरीफ की एक रिवायत में है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: जो शख्स हर फर्ज़ नमाज़ के बाद आयतुल कुर्सी पढा करे तो उसको जन्नत में दाखिल होने के लिए सिवाए मोत के दूसरी कोई रूकावट नहीं है, यअनी मोत के बाद फोरन वह जन्नत के आषार और राहत व आराम को पाने लगेगा।

(सहीह इब्नुस्सुन्नी:१२४, मआरिफुल कुर्आन: १/६१२)

एक हदीस शरीफ में हुज़ूर ﷺ का इर्शाद है जो शख्स फर्ज़ नमाज़ के बाद आयतुल कुर्सी पढेगा वह दूसरी नमाज़ के आने तक खुदा तआला की हिफाज़त में रहेगा। (मजमउज़्ज़वाइद: २/१४८)

इन अहादीस से मअलूम हुवा के आयतुल कुर्सी को हर फर्ज़ नमाज़ के बाद पढ लेना चाहिए, और दिन रात में किसी एक वक्त घर में भी पढ लेना चाहिए।

﴾३२﴿ नमाज़ के बाद पढने का एक अमल; फुकरावाली तस्बीह:

हज़रत अबूहुरैरह रदि. हुज़ूर ﷺ से रिवायत करते हंय के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: के जिसने

३३ मरतबा سُبْحَانَ اللّٰهُ

३३ मरतबा اَلْحَمْدُ لِلّٰهُ

और ३३ मरतबा اَللّٰهُ أَكْبَرْ पढा,

बस यह कुल ९९ मरतबा हुवा और सोवीं मरतबा में

لَآ إِلٰــهَ اِلّا اللّٰهُ وَحُدَهٗ لا شَرِيُکَ لَهٗ لَهُ المُلُکُ وَلَهُ الُحَمُدُ

وَهُوَ عَلیٰ کُلِّ شَيُءٍ قَدِيُرٌ.

पढे तो उसके गुनाह मुआफ हो जाते हंय, चाहे समंदर की झाग के बराबर हों। (मुस्लिम श. १/२१९)

नोट: हदीस शरीफ से मअलूम होता है के सूरए इख्लास यअनी (قُلُ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ) और सूरए फलक यअनी (قُـلُ أَعُـوُذُ بِـرَبِّ الـفَـلَـقُ) और सूरए नास यअनी (قُلُ أَعُوُذُ بِرَبِّ النَّاسُ) भी हर फर्ज़ नमाज़ के बाद पढ लेना चाहिए।(नसइ:१/१५०)

अब जो दो वज़ीफे लिखे जा रहे हंय वह सिर्फ फजर और मगरिब के फर्ज़ के बाद के मुतअल्लिक है।

(२३) जहन्नम से छुटकारे की दुआ: (सात मरतबा)

फजर और मगरिब की नमाज़ के बाद यह दुआ मांगें।

اَللّٰهُمَّ أَجِرْنِىْ مِنَ النَّارِ ․

फज़ीलत: हज़रत हारिस रह. से रिवायत है के आप ﷺ ने मेरे साथ कान में बात फरमाई और फरमाया जब तु मगरिब की नमाज़ से फारिग हो जाए तो सात मरतबा यह दुआ मांगा कर, जब तुने यह दुआ मांग ली और उसी रात तेरा इन्तेकाल हुवा तो तेरे लिए आग से छुटकारा लिखा जाएगा, और जब तु फजर की नमाज़ पढ ले

तब भी यह दुआ मांगा कर, अगर उसी दिन तेरा इन्तेकाल हुवा तो तेरे लिए जहन्नम से छुटकारा लिखा जाएगा। (अबूदावुद: २/६९३)

﴾३४﴿ फजर और मगरिब के फर्ज़ के बाद पढने का वज़ीफा: (दस मरतबा)

لَآ إِلٰـــهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْکَ لَهٗ لَهُ الْمُلْکُ وَلَهُ الْحَمْدُ يُحْيِيْ وَيُمِيْتُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرْ.

हदीस शरीफ में है जो शख्स फजर की नमाज़ के बाद किसीसे बात किए बगैर नमाज़ ही की हालत में बेठ कर (यअनी कायदे में बेठते हंय इस तरह) अपनी जगा से उठने से पेहले यह कलिमात दस मरतबा कहे तो उसके लिये हर हर कलिमह के बदले में

(१) दस नेकियां लिखी जाती हंय

(२) दस गुनाह मुआफ होते हंय
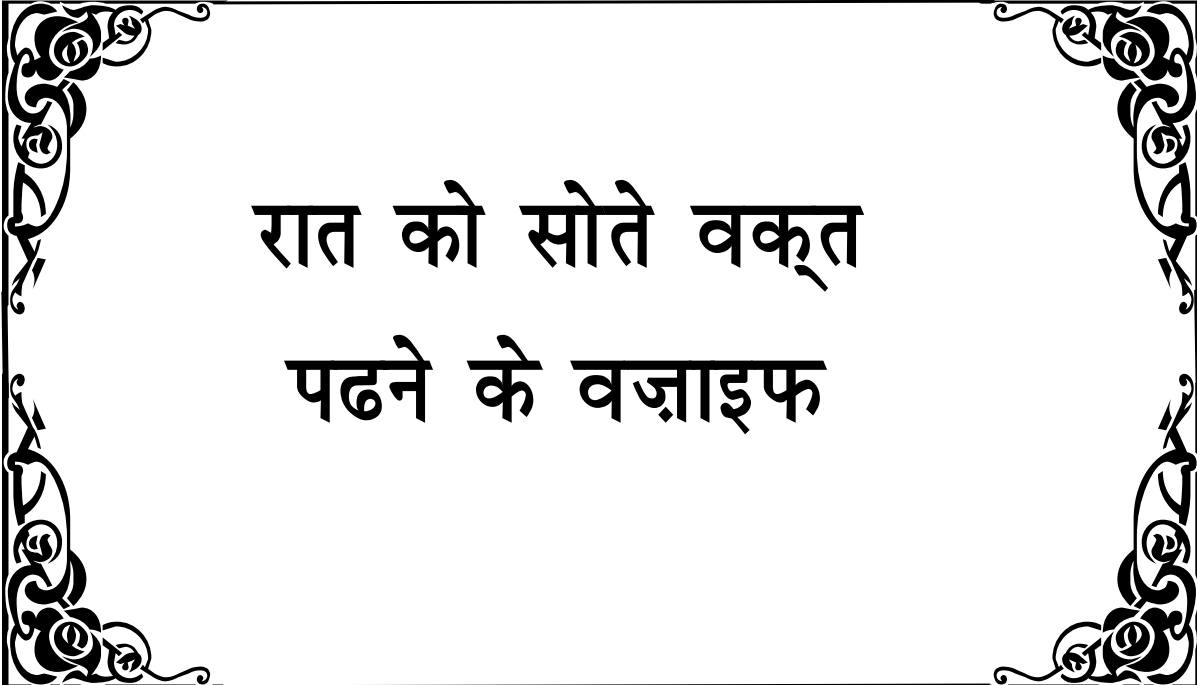
(३) दस दरजे (जन्नत में) बुलंद होते हंय

(४) वह पूरा दिन नापसंदीदह चीज़ और हर आफत और शैतान की शरारत से महफूज़ रहता है।

(५) और उस दिन में गुनाहों से महफूज़ रहेगा मगर यह के अल्लाह के साथ शिर्क करे। (तिरमिज़ी: २/१८५ अमलुल यवमि वल्लयलह पे५३ मकतबए हुसयनियह गुजरानवाला)

नोट: एक रिवायत में दस गुलाम आज़ाद करने का सवाब भी आया है, और उस दिन में यह कलिमात पढनेवाले के लिए तस्बीह यअनी दुआ करते रहेंगे।

(मजमउज़्ज़वाइद: १०/११०,१०९)

रात को सोते वक्त पढने के वज़ाइफ

सोने के वकत की दुआएं और आ'माल

﴾३५﴿ सोने के वकत का पेहला अमल:

पेहले आयतुल कुर्सी पढें।

बुखारी शरीफ की एक हदीस से मअलूम होता है के आयतुल कुर्सी रात को बिस्तर पर सोते वक्‌त पूरी पढें तो अल्लाह तआला की तरफ से एक हिफाज़त करनेवाला आ जाता है और सुब्ह तक शैतान करीब नहीं आता।

(बुखारी शरीफ : ५/५४ शैख तकियुद्दीन नदवी मद्द ज़िल्लुहूवाला नुस्खा)

﴾३६﴿ दूसरा अमल:

أَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ ۝ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

اٰمَنَ الرَّسُوْلُ بِمَآ اُنْزِلَ إِلَيْهِ مِنْ رَّبِّهٖ وَ الْمُؤْمِنُوْنَ كُلٌّ آمَنَ بِاللّٰهِ وَ

مَلٰئِكَتِهٖ وَ كُتُبِهٖ وَ رُسُلِهٖ، لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ أَحَدٍ مِّنْ رُّسُلِهٖ وَ قَالُوْا سَمِعْنَا

وَ أَطَعْنَا غُفْرَانَكَ رَبَّنَا وَ إِلَيْكَ الْمَصِيْرُ ۝ لَا يُكَلِّفُ اللّٰهُ نَفْسًا إِلَّا

وُسْعَهَا لَهَا مَا كَسَبَتْ وَ عَلَيْهَا مَا اكْتَسَبَتْ رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَآ اِنْ

نَسِيْنَآ أَوْ اَخْطَأْنَا رَبَّنَا وَ لَا تَحْمِلْ عَلَيْنَآ إِصْرًا كَمَا حَمَلْتَهٗ عَلَى

الَّـذِيْـنَ مِـنْ قَبْـلِـنَـا رَبَّنَا وَ لَا تُـحَمِّلْنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهٖ وَ اعْفُ عَنَّا وَ اغْفِرْ لَنَا وَ ارْحَمْنَا أَنْتَ مَوْلٰينَا فَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْن ٥

यह सूरए बकरह की आखरी दो आयतें हंय, अहादीस सहीहा मुअतबरह में इन दो आयतों के बडे बडे फज़ाइल मज़कूर हंय, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: जिस शख्स ने रात को यह दो आयतें पढ ली तो यह उसके लिये काफी है।

और इब्ने अब्बास रदि. की रिवायत में है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: के अल्लाह तआला ने दो आयतें जन्नत के खज़ाइन में से नाज़िल फरमाई है, जिसको तमाम मख्लूक की पेदाइश से दो हज़ार साल पेहले खुद रहमान ने अपने हाथ से लिख दिया था, जो शख्स इशा की नमाज़ के बाद इन आयतों को पढ ले

तो वह उसके लिये कयामुल्लयल यअनी तहज्जुद के बराबर हो जाती है, और मुस्तदरक हाकिम और बयहकी की रिवायत में है के रसूलुल्लाहﷺ ने फरमाया के अल्लाह तआला ने सूरए बकरह को उन दो आयतों पर खत्म फरमाया है जो मुजे उस खास खज़ाने से अता फरमाई है जो अर्श के नीचे है, इस लिये तुम खास तोर पर इन आयतों को सीखो, और अपनी औरतों, बच्चों को सीखाओ। इस लिए हज़रत उमर रदि. और हज़रत अली मुरतज़ा रदि. ने फरमाया के कोई आदमी जिसको कुछ भी अक्ल हो वह सूरए बकरह की इन दो आयतों को पढे बगैर न सोएगा। (मआरिफुल कुर्आन: १/६३१)

(३७) तीसरा अमल:

हज़रत नवफल रदि. ने दरख्वास्त की के या रसूलल्लाहﷺ मुजे एसी चीज बता दें के जिसको में सोते वकत अपने बिस्तर पर पढुं आपﷺ ने फरमाया

सुरए काफिरून पढो, (यअनी कुल या अय्युहल काफीरून वाली सूरत) इस लीये के उसमें शिर्क से बेज़ारी है। (तिरमीज़ी २/१७७)

﴾३८﴿ चोथा अमल:

हज़रत आइशा रदि. फरमाती हंय के नबीए करीम ﷺ रोज़ाना रात को जब अपने बिस्तर पर तशरीफ लाते तो तीनों सूरतों को यअनी सूरए इख्लास और मुअव्वज़तैन को पढ कर दोनों हथेली मिलाते और दम फरमाते, फिर पूरे बदन पर हाथ फिराते, और सर, चेहरा और आगे से शुरू फरमाते इस तरह तीन मरतबा करते। (अबूदावुद: किताबुल अदब: २/६८९)

तरीका

पेहले एक मरतबा **قُلْ هُوَ اللّٰهُ أَحَدُ** , **قُلْ أَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَق** और **قُلْ أَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاس**

पढ लेवे और दोनों हथेली को मिला कर दम कर के पूरे बदन पर फिरा लेवे फिर दूसरी मरतबा यह तीनों सूरतें पढ कर दोनों हथेली को मिला कर दम कर के पूरे बदन पर फिरा लेवे, फिर तीसरी मरतबा भी तीनों सूरतें पढ कर दोनों हथेली को मिला कर दम कर के पूरे बदन पर फिरा लेवे, हाथ फिराने की इब्तिदा सर, चेहरे और सामने की तरफ से करे। (बुखारी शरीफः २/९३५)

﴾३९﴿ पांचवा अमल; इस्तिगफार का खास फायदा

أَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ الَّذِيْ لَآ إِلٰـهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّوْمُ وَ أَتُوْبُ إِلَيْهِ۔

हदीस शरीफ में है के जो शख्स रात सोते वक्त बिस्तर पर पहोंच कर यह इस्तिगफार तीन मरतबा पढे अल्लाह तआला उसके गुनाहों को मुआफ फरमा देंगे अगरचे समंदर की झाग के बराबर हो, अगरचे दरख्त के पत्तों और रेत के ढेर के

बराबर हों, अगरचे दुन्या के दिनों की ता'दाद के बराबर हों।

(तिरमिज़ी: २/१७७)

﴾४०﴿ छटा अमल; हज़रत फातिमा रदि . वाली तस्बीह:

३३ मरतबा سُبْحَانَ اللّٰهُ

३३ मरतबा اَلْحَمْدُ لِلّٰهُ

३४ मरतबा اَللّٰهُ اَكْبَرُ (अबुदावुद: २/६९०)

हुज़ूर ﷺ की साहबज़ादी हज़रत फातिमा रदि. घर के काम से थक जाती थी और घर के काम के लिये गुलाम, बांदी चाहती थी तो खूद नबीए करीम ﷺ ने गुलाम बांदी के बजाए यह अमल सिखाया। (बुखारी शरीफ: २/९३५)

इस लिए यह तस्बीह रात सोते वकत पढ लिया करो।

नोट: यकीन के साथ इस अमल को पढें, इन्शाअल्लाह सारी थकावट दूर हो जाएगी और सुब्ह ताज़ह उठोगे।

बुरे ख्वाब के शर से बचने का एक अहम अमल

हदीस शरीफ में है के जब तुममें से कोई शख्स बुरा ख्वाब देखे तो अपनी बाइं जानिब तीन मरतबा थुत्कार दे यअनी थु-थु कर दे और शैतान के शर से और ख्वाब के शर से अल्लाह तआला की पनाह चाहे और अपना पेहलू जिस पर (ख्वाब के वक्त) सोया हुवा था, बदल दे और अपने से मुहब्बत रखनेवाले के सिवा किसीको वह ख्वाब न बताए।(मुस्लिम श.ह.नं.२२६२ पे१०००, मत्बूआ दारे इब्ने हज़्म बैरूत)

और फोरन या बाद में दो रकाअत सलातुल हाजत पढ कर इस ख्वाब के शर से हिफाज़त की दुआ कर ले।

तफसीली फेहरिस्त

WWW.Nooranimakatib.com

इस किताब और साहिबे किताब की दुसरी किताबों को इन्टरनेट में पढने और बयानात और तफसीर की मजलिस सुनने और फरइइ डाउनलोड करने के लिअे इस वेबसाइट की मुलाकात करें: **WWW.Nooranimakatib.com**

हर पीर को सुरत में होनेवाली तफसीर की मजलिस इशा के बाद लावइ सुनने के लिअे भी इस वेबसाइट की मुलाकात करें।

बराए इसाले सवाब

☆ हज़रत मवलाना अबुल खैर अब्दुस्समद इरानी रह .

☆ हज़रत मवलाना अमानुल्लाह इरानी रह .

☆ हज़रत मवलाना अस्अदुल्लाह इरानी रह .

और इरानी खानदान के तमाम मर्हुमीन